।। ओ३म् ।।

प्रभु से विनय

हे परमात्मन! किसी भी लोक-लोकान्तर का प्राणी हो, परन्तु जब उसे अशान्ति प्राप्त होती है तो वह तेरी ही शरण में आ जाते हैं। वह उस परमपिता परमात्मा के शरणागत आ करके और अपनी मानवता को शान्तिप्रियता में बना करके प्रस्थान कर जाते हैं। इसी प्रकार आज हम उस प्रभु की याचना करते हुए उस ब्रह्म की याचना करते हुए आज हम अपने जीवन को ऊँचा बनाते चले जायें। क्योंकि मानव किसी भी आंगन में भ्रमण करने वाला हो परन्तु एक समय उसका हृदय कष्टमयी प्रतीत होने लगता है। आज हम प्रभु से याचना कर रहे, कि हे प्रभु! तू संसार के प्राणियों को ऊँचा बना, हे प्रभु! उसके द्वारा ओज और तेज हो। इन्हीं से यह समाज और राष्ट्र ऊँचा बना करता है। भगवन्! जब हम प्रभु की याचना करते हैं तो हमारा हृदय गदगद होने लगता है। मैं अपने प्रभु से यह कहा करता हूँ कि हे परमात्मन्! तू कितना उज्ज्वल है, तेरी महानता कितनी महान है, तू उस महानता का दिग्दर्शन करता है, जहाँ मानव किसी काल में स्वप्नवत भी दृष्टिपात नहीं कर पाता। आज हम उस मनोहर देव के द्वारा जाना चाहते हैं। प्रायः मानव की उत्कट इच्छा रहती है, मेरा प्यारा कोई भी मानव हो परन्तु वह प्रभु के लिए उत्सुक रहता है, क्योंकि आनन्द जो प्राप्त होता है। आनन्द के लिए वह अपने जीवन को सदैव प्रगतिशील बनाता रहता है। यह उत्कट इच्छा जागृत रहती है कि मैं आनन्द को प्राप्त करने वाला बनूँ। आज मैं अपने उस आनन्द को प्राप्त करना चाहता हूँ जिस आनन्द में वास्तव में परम आनन्द प्राप्त होता है।

मेरे प्यारे! भद्रपुरुषों आज हम उस मनोहर देव की याचना करते हुए, उस देव की शरण में जाते हुए हम उसकी याचना करते चले जाते हैं। और कहा करते हैं कि हे प्रभु! तू हमें अपनी गोद में धारण कर, अपने आंगन में धारण कर जिससे हमारा जीवन सुगठित रहेगा। तो भगवन् हमारे जीवन में अशान्ति नहीं रहेगी।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अँक : 513	कुल पृष्ठ संख्या	समग्र अँक : 588
वर्ष : 43	44	समग्र वर्ष : 49

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2.	अनुक्रम		4
3.	देवयान और देवता	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-20
4.	जीवन और मृत्यु	पूज्यपाद-गुरुदेव	21-38
5.	ऋषियों के उद्‌गार	पूज्यपाद-गुरुदेव	39
6.	श्रद्धा सुमन		40
7.	दान, पुस्तकों की सूची, प्राप्ति के स्थान व सूचना आदि		41-43

सूचना

डाक विभाग द्वारा नाम व पते के साथ सदस्य संख्या लिखने के लिए रोक लगा दी गई है इसलिए सदस्य संख्या नहीं लिखी जा रही है। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वह पिछले माह की पत्रिका से अपनी सदस्य संख्या नोट कर लें और पत्र व्यवहार करते समय अपना नाम व पूरा पता सदस्य संख्या अवश्य लिखें। डाक विभाग से अनुरोध किया गया है कि सदस्य संख्या न लिखने पर सदस्यों को पत्रिका भेजने में कठिनाई आती है। इसलिए नाम, पता के साथ सदस्य संख्या लिखने की स्वीकृति दी जाए। आदेश मिलने पर ही सदस्य संख्या, नाम व पते के साथ लिखी जा सकेगी।

डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, ए-59, पंचशील एन्क्लेव,
नई दिल्ली-110017, दूरभाष-011-41030481

।। ओ३म् ।।

देवयान और देवता

जीते रहो!

देखो मुनिवरो ! अभी-अभी हमारा पर्ययण समय समाप्त हुआ। आज हम तुम्हारे समक्ष कुछ वेदमन्त्रों का पाठ कर रहे थे। आज का हमारा वेद पाठ बड़ा मधुर और सुन्दर था और हमारे हृदय को स्पर्श करता चला जा रहा था। पूर्व के मन्त्रों में उन देवताओं की याचना कर रहे थे जो हमारे मनुष्यत्व में नाना सहायता दिया करते हैं। जिन देवताओं के आधार से यह सृष्टि चल रही है। जिन देवताओं के आधार से यह प्राण स्थिर रहता है। उन देवताओं के लिए हम याचना करते चले जाएँ। सर्वप्रथम हमें उस देवता की पूजा करनी चाहिये जो देवताओं का भी देवता है। मुनिवरो ! वह है परमपिता परमात्मा। जिसकी याचना करते हुए देवता भी कार्य करते हैं। आज हम उस परमपिता परमात्मा का गुण गाते चले जाएँ। हे देव ! आ और हमारा कल्याण कर।

मुनिवरो ! आज हम व्याकुल हो रहे हैं, हमारा जीव क्षणभुंगर है। इस क्षणभंगुर जीवन में भगवान् ! आपकी महिमा कुछ तो गुणगान गाएँ, आपकी अलौकिकता पर तो दृष्टि पहुँचाएँ। हे देव ! आपकी उस महान दया को विचारते चले जा रहे हैं जो सृष्टि के प्रारम्भ से चली आ रही है। आज हम उस भूषण को चाहते हैं जिससे भगवन्! हमारा वास्तविक कल्याण होता है। हमें वह भूषण नहीं चाहिए जो क्षणभंगुर हो। इस अलौकिकता पर प्रत्येक मानव, प्रत्येक देवकन्या को विचार करना है।

मुनिवरो ! आज हम उस गुणगान को गाएँ जिससे हम देवता बन सकें और संसार को देवता बना सकें। हमें वह देवता बनना है कि कम से कम एक व्यक्ति को तो अपने सदृश देवता बना ही सकें। उस देवत्व की हमें देव से याचना करनी है। जब तक हम उस देव का अनुकरण नहीं करेंगे तब तक हमारा जीवन ऊँचा नहीं बनेगा।

कल मेरे प्यारे महानन्द जी ने प्रश्न किया कि देवयान और पितृयान किसे कहते हैं? आज के वेदपाठ में देवयान और पितृयान का बड़ा सुन्दर वर्णन आ रहा था, देवयान और पितृयान किसे कहते हैं, यह संसार जानता हुआ भी नहीं जानता। आज हम तुम्हें इसका ज्ञान कराएँ कि क्यों नहीं जानता और क्यों जानता है।

मुनिवरो ! जानता तो इसलिए है कि जब इसका आत्मा शरीर से निकलता है तो अन्तरिक्ष में और देवयान में चला जाता है। जानता हुआ जानता इसलिए नहीं क्योंकि यह बुद्धि से अनुकरण करता है, यह बुद्धि से दूर का विषय है, बुद्धि से विचारने से बुद्धि शान्त हो जाती है, वाणी भी उस महिमा का गुणगान नहीं गा सकती।

महर्षि पारा मुनि और महर्षि व्यास का विचार-विनिमय

मुनिवरो! देखो महर्षि पारा मुनि से एक समय महर्षि व्यास ने प्रश्न किया कि भगवन् ! जब यह आत्मा शरीर से निकलता है तो किस-किस दिशा में कहाँ-कहाँ जाता है? कौन-कौन कर्म करने से देवता बनता है? देवता किसको कहते हैं?

मुनिवरो! देखो पारा मुनि ने कहा कि भाई मेरी किंचित बुद्धि है, मैं अपनी सूक्ष्म बुद्धि के अनुकूल कुछ उच्चारण करूँगा यदि कोई बुद्धिमान इससे ऊँची वार्ता प्रकट करे तो उसको भी स्वीकार कर लेना, यह ऋषियों का वचन है। कोई ऋषि, महर्षि अपनी बुद्धि को ऊँचा नहीं कहता, यह क्या है? यह विचार में नहीं आता कि प्रत्येक बुद्धिमान, गम्भीर और तपस्वी अपनी बुद्धि को किंचित ही कहते चले आए हैं। वह इसलिए कहा है कि इस किंचित बुद्धि से कोई वाक्य अशुद्ध हो जाए तो उस अशुद्धता का भार अपने ऊपर न बने, बुद्धिमान उसका निर्णय दे दें।

महर्षि पारा मुनि ने कहा कि हे व्यास ! संसार में जब यह आत्मा शरीर में आकर पवित्र बनने का प्रयत्न करता है, अपने जीवन को तपस्वी बनाता है, यज्ञमय बनाता है, परमपिता परमात्मा की महिमा का

गुणगान करता है, जिज्ञासु बनता है और ऊँचे कर्म करता है तो वह कुछ देवयान में रमण करता है, जहाँ देवात्माएँ रमण करती हैं। हमारे शास्त्रकारों ने ऐसा भी माना है कि जो यहाँ तुच्छ कर्म करते हैं और पापाचार करते हैं उन्हें जैसा मैंने पूर्वकाल में कहा है कि उन्हें **अश्वस्थी वायु** में रमण करके स्वतः ही माता के गर्भस्थल में जाने की आवश्यकता रहती है। उनको इतना अवसर प्राप्त नहीं होता कि वे देवयान में जाएँ उनके अन्तःकरण में इतने पाप एकत्रित हो जाते हैं कि वह माता के स्थल में उसी दिशा में फिर स्थापित हो जाता है और निम्न योनियों में जन्म ग्रहण करता है।

मुनिवरो ! इसी प्रकार आज हमें इस विचार पर पहुँचना चाहिए कि पितृयान और देवयान किसको कहते हैं। इसके लिए आज मुझे विवाद में नहीं जाना है। मुझे तो अपनी किंचित बुद्धि से जो प्रभु ने दी है उस बुद्धि से ऋषियों का प्रमाण देकर कुछ उच्चारण कर रहा हूँ, हो सकता है निर्णय देने में कुछ त्रुटियाँ हो जाएँ।

मुनिवरो! सुनो, ऋषि ने कहा **देवयान उसको कहते हैं जहाँ देव आत्माएँ रहती हैं।** जहाँ वायु, अग्नि आदि की प्रधानता वाले शरीर होते हैं। (अर्थात् सूक्ष्म शरीर वाली आत्माएँ निवास करती हैं) अन्तःकरण में पुण्य की स्थापना होती है और वह महान्, पवित्र लोक में विचरती हैं जिसको देवलोक या देवयान कहते हैं।

आज प्रश्न होता है कि क्या देवयान में सत्संग भी करते हैं? क्या प्रश्न-उत्तर भी करते हैं।

तो मुनिवरो! देखो ! देवता प्रश्न-उत्तर नहीं करते, वे तो अपने आनन्द में रमण करते हैं। वे तो महान् संसार को देखते हैं, यहाँ किस वस्तु की आवश्यकता है, संसार में वेदीय निधि शून्य होने पर उसको उच्च बनाने के लिए देवता स्वयँ इच्छा के अनुकूल प्रकट हो जाते हैं और उस महानता का प्रसार करके यहाँ से चल बसते हैं।

भगवान् कृष्ण का पूर्व जन्म

मुनिवरो ! जैसे भगवान कृष्ण के पूर्व जन्म का विवरण मिलता है, **भगवान् कृष्ण इस कृष्ण जीवन से पूर्व मध्यूनपान ऋषि महाराज थे।** मध्यूनपान ऋषि महाराज जब देवयान में विचरण करते थे तो संसार को देखा करते थे कि यहाँ क्या हो रहा है? यह कौन सी प्रगति को जा रहा है जब यहाँ वैज्ञानिक यन्त्रों का आविष्कार किया जा रहा था और राजा कंस के अत्याचारों से महापाप छा रहा था उस काल में मध्यूनपान ऋषि ने माता देवकी के यहाँ आ करके उस महान् कष्ट यात्रा में माता के गर्भस्थल में धारण होकर माता यशोदा के गृह में पहुँचे। उन्होंने आ करके संसार को ऊँचा बनाया और अर्जुन से कहा कि मैं सब प्रकृति को जानता हूँ परन्तु मैं उस कर्म को नहीं करूंगा जिस कर्म के करने से यह संसार तुच्छ बन जाए, मुझे तो वह कर्म करना है जिससे यह संसार ऊँचा बने। तो मुनिवरो ! उसका नाम देवयान है जहाँ संसार को देखा जाता है।

महर्षि अटूटी महाराज

मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे महर्षि अटूटी महाराज का विवरण दिया कि वह देवयान में रमण करते थे जिनके जीवन की कुछ घटनाएँ प्राप्त होती हैं। महर्षि अटूटी की माता का नाम सोमवती था जो महर्षि कोलशती की पत्नी थी। उसने अपने जीवन में सोचा कि मेरा पुत्र देवयान में विचरने वाला हो। पुत्र उत्पन्न होने के पश्चात् माता ने सोचा कि मैं तो अपने बालक को अटूटी नाम से उच्चारण करूँगी जिसकी परमात्मा में अटूट धारणा हो तो देवताओं के लिए अपने पुत्र को अर्पण करती हूँ। उस समय देखो ! उस बालक अटूटी ने माता के महान् आदेशों को पालन करके, ब्रह्मचारी बन करके देवयान का प्रयत्न किया। धारणा, ध्यान, समाधियों में सँलग्न होकर इस अन्तरिक्ष को और तीनों प्रकार की वायु से जैसा मैंने पूर्वकाल में कहा है कि जैसे सोमहिति, मध्यान और इन्द्र वायु हैं, ऊपर के स्थान में जिसको देवयान कहा जाता है उसमें विचरने वाले बने। माता ने उसको आदेश दिया था कि यह

देव की अमूल्य निधि है। हे पुत्र ! जब-जब यह लुप्त हो जाए तू इसको ऊँचा बनाना। तो मुनिवरो ! उस बालक ने देव की अमूल्य निधि को जानकर देवयान में रमण किया। इसके पश्चात् जैसा मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी से सूचना मिली है कि उसने इस कलयुग में आकर माता के गर्भ में जन्म लिया और जन्म पा करके (महर्षि दयानन्द वन के) संसार को ऊँचा बनाने का प्रयत्न किया।

उद्‌बोधन

आज हमें देवयान की वार्ताओं को स्वीकार कर लेना चाहिए। जो देवता हमें आदेश देकर यहाँ से देवयान चले जाते हैं और देवयान से आकर हमारे कल्याण के लिए सोचते हैं। आज उन देवताओं की वार्ता को स्वीकार कर इस संसार में ऊँचा बनना है। आज हमें उस निद्रा में व्याकुल नहीं होना है जिस निद्रा में प्रमादी और आलसी बन करके अपने जीवन को शान्त किया करते हैं। हमें देवयान की वार्ताओं को और देवताओं के वचनों को स्वीकार करके संसार से चलना है।

मुनिवरो! देखो महाराज कृष्ण के समय कितना दुराचार आ चुका था, कितना विज्ञान आ चुका था परन्तु भगवान् कृष्ण के जीवन को न छू सका, देवता उसी को कहते हैं जिसके जीवन को यह रजोगुण तमोगुण से भरा हुआ संसार न छू सके। उनको जानो वह देवयान से आए हैं, वह संसार में कुछ कर्म करके जाएँगे तो देवयान में ही जाएँगे। देवयान उसको कहते हैं जहाँ देवात्माएँ रमण करती हैं।

पिशाच

मुनिवरो! महा पिशाच (देव योनि विशेष) भी कहते हैं। पिशाच उन्हें कहते हैं जिनका पुण्य अधिक होता है और पाप सूक्ष्म, वह यहाँ के संसार का उच्च अध्ययन करते हुए देवयान में जाने का प्रयत्न करते हैं। देवयान से निचले स्थान में आने से उन्हें पिशाच कहते हैं। वह अन्तरिक्ष में रमण करते हुए अपने पर विचार करते हुए सोचा करते

हैं कि प्रकाश मिले तो हम प्रकाश में रमण करें। जैसी मुझे सूचना मिली है इस **चन्द्रमा में पिशाच योनियाँ रहती हैं।**

मुझे **मेरे प्यारे लोमश मुनि महाराज ने एक समय निर्णय दिया** और इन्होंने मुझसे अब से लाखों वर्ष पूर्व कहा था कि गुरुदेव ! मैं चन्द्रमा में गया। चन्द्रमा में मैंने देखा कि वहाँ शीतल अनुगच्छित महान् योनियाँ रहती हैं जिनको पिशाच कहते हैं। उन पिशाच योनियों के वहाँ सब ही कुछ हैं। उनके कार्यालय भी हैं। परमपिता परमात्मा के गुण गान के सुन्दर-सुन्दर स्थान भी हैं। परन्तु आज मुझे लोमश मुनि के आदेशों की कुछ पुनरुक्ति नहीं करनी है। मैंने तो भाई देखा नहीं वैसे ही उच्चारण करूँ परन्तु सुना अवश्य है।

आज कोई मानव यह कहता है कि देवयान नहीं। यदि होगा तो प्रेत योनि भी होगी जैसा मुझे महानन्द जी ने निर्णय कराया। इन्होंने कहा था कि आधुनिक संसार यह कहता है कि जब देवयान है, देव योनियाँ हैं, देवता हैं तो देखो प्रेत योनि, भूत योनि भी अवश्य होगी।

मुनिवरो! देखो देवयान को तो आज हम देख रहे हैं इसलिए गौरव के सहित कह सकते हैं कि यह देवयान है। जहाँ सूक्ष्म शरीर वाली आत्माएँ एकत्रित होकर अपना अनुकरण करती हैं और अपनी महान् विचित्रताएँ और सत्संग भी करती हों।

देवयान और देवताओं की वाणी श्रवण करने का यन्त्र

मुनिवरो ! एक समय महाराजा अर्जुन ने महाराजा शिव के द्वारा देवयान और देवताओं की वाणी पान करने के लिए एक वैज्ञानिक यन्त्र को खोजा था। महाराजा अर्जुन ने महाराजा शिव से कहा था कि हे शिव ! मैं देवयान के देवताओं की वाणी का अनुकरण करना चाहता हूँ। उनको यन्त्रों में लाना चाहता हूँ मुझे ऐसे यन्त्र बनाने की प्रतिक्रिया निर्णय कराइये। महाराजा शिव ने उस यन्त्र का सब विवरण कह सुनाया। ऐसा कहा जाता है कि उसी समय अर्जुन ने यन्त्र बनाया। जब उसका प्रहार किया जाता था तो वह यन्त्र अन्तरिक्ष में रमण करता

था और ऐसा कहा जाता है कि उस महान् अर्जुन ने उस यन्त्र द्वारा देवताओं की वाणी को श्रवण किया, आधुनिक विज्ञान जैसे मेरे प्यारे महानन्द जी ने निर्णय कराया और यदि इसको द्वापर के भौतिक विज्ञान से तुलना करते हैं तो आज के संसार का विज्ञान हमें आधा प्रतीत होता है।

देवता

मुनिवरो ! आज देवयान की चर्चा कर रहे थे। **सूक्ष्म शरीर से अन्तरिक्ष में रमण करने वाली आत्माओं को देवता कहते हैं।** देवता वह होते हैं जो हमें कुछ देते हैं। वह आत्माएँ इस संसार को देखा करती हैं। जब यहाँ किसी पदार्थ की सूक्ष्मता हो जाती है तब ही आ कूदते हैं और हमारे कल्याण के लिए सोचते हैं। हमारे कल्याण के लिए हमें कुछ देते हैं। हमें ज्ञान देते हैं। हमें उस महिमा का प्रदर्शन करा जाते हैं जिससे हमें शान्त की गई वस्तु प्रकट हो जाती है और प्रकट हो करके हमारा जीवन आलौकिक बन जाता है। आज हमें विचारना चाहिए। इसको महानन्द जी देवयान कहते हैं।

देवता बनने के कर्म

आज महानन्द जी कहेंगे कि वह कर्म तो निर्णय नहीं कराया जिस कर्म को करने से देवता बनते हैं।

मुनिवरो ! मैंने अभी-अभी महर्षि अटूटी का कुछ विवरण दिया। भगवान् कृष्ण के पूर्व जन्म की कुछ वार्ता प्रकट की। आज हमें विचारना यही है कि हमें देवताओं के लिए क्या करना है। हमें सबसे पूर्व इस संसार में देवता बनना है। महर्षि पारा मुनि ने कहा था कि यदि आज तुम्हें संसार में देवता बनना है तो इसके लिए सबसे सहज यही है कि इस संसार में ऊँचा बनने का प्रयत्न करो जैसे जल में कमल रहता है जल उस कमल को छू नहीं सकता। इस प्रकार आज देवता बनने के लिए कमल बनना है जिससे लक्ष्मी तुम्हारे में रमण हो जाए। कौन सी लक्ष्मी?

जो लक्ष्मी महान् सरस्वती है, कहा जाता है कि कमल से लक्ष्मी का जन्म हुआ है। वह कमल क्या है? वह कमल यह ही है कि जिस महान् आत्मा को संसार छू न सके उससे उत्पन्न होने वाली वह ''श्री'' सरस्वती मानव को देवता बना देती है, वह हमें उन देवताओं की शरण में पहुँचा देती है। आज हमें अन्तःकरण की दृष्टि से देखना चाहिए। हमें उन चक्षुओं से देखना चाहिए जो वास्तविक चक्षु हैं। हमें पाप के नेत्रों से यह संसार नहीं देखना है हमें अन्तःकरण के चक्षुओं से देखना है जो देवताओं के देखने वाले होते हैं। जो चक्षु परमात्मा के दर्शन कराने वाले होते हैं। जो चक्षु हमें कमल बना देते हैं, जो चक्षु हमें सरस्वती की गोद में धारण करा देते हैं। महर्षि पारा मुनि ने कहा था कि हे पुत्र व्यास ! यदि तुम्हें संसार में ऊँचा बनना है और देवता बनना है तो तुम आज संसार से ऊँचे उठो, वह कर्म करो जिस कार्य के करने से तुम्हारी संज्ञा ऊँची बने, विलक्षण बने। तो मुनिवरो! यह देवयान और देवताओं की श्रेणी में जाने का प्रयत्न है, यह कर्म है।

मुनिवरो ! यज्ञों को करने वाले और यज्ञों में ब्रह्मा बनने वाले विशेषकर देवताओं की श्रेणी में जाते हैं परन्तु ऐसे ब्रह्मा नहीं जैसे मेरे प्यारे महानन्द जी आधुनिक ब्रह्माओं का निर्णय करते हैं जो अपने उद्देश्य को नहीं जानते। **ब्रह्मा वह है जिसका वेदमय जीवन हो।** वेद कहते हैं प्रकाश को, जिसका प्रकाशमय जीवन हो।

ब्रह्मा यज्ञशाला में विराजमान हो रहा है, यज्ञशाला क्या है? यह ज्योति यज्ञशाला है उस वेद की लौ उसकी वेदी है। ब्रह्मा उस लौ के प्रकाश में रहता है, उसकी भावना उस महान प्रकाश के साथ-साथ जाती है। देवता उसकी भावनाओं को स्वीकार करते हैं, स्वीकार करके एक समय वह आता है कि वह भी देवताओं की श्रेणी में विराजमान हो जाता है। आज हमें वह कर्म करना चाहिए जिससे हमारे जीवन की महिमा ऊँची बने, जिससे हम देवताओं में रमण करने वाले बनें। जहाँ बेटा ! हमारे आदि ऋषिवर चले गये हैं।

पूज्य महानन्द जी — 'भगवन् ! एक वार्ता और जानना चाहते हैं कि मोक्ष आत्माओं में और देव आत्माओं में क्या अन्तर है?''

महानन्द जी ! देवता उन्हें कहते हैं जिनकी सूक्ष्म शरीर की संज्ञा समाप्त नहीं होती और मोक्ष वह है जो इन बन्धनों से पार हो चुका हो—जहाँ अन्तःकरण, बुद्धि और महान् इन्द्रियों के विषय नहीं रहते, उसको बेटा ! मोक्ष कहते हैं।

पूज्य महानन्द जी — 'भगवन् ! एक समय आपने कहा था कि अन्तःकरण आत्मा के साथ चलता है।'

'नहीं ऐसा तो नहीं कहा बेटा ! तुम कैसे उच्चारण कर रहे हो?'

पूज्य महानन्द जी — 'नहीं भगवन् ! आपने कहा है और यह कहा है कि अन्तःकरण उस आत्मा के साथ-साथ चला करता है जो मोक्ष में जाता है। आपने ऐसा भी कहा है कि यदि अन्तःकरण साथ न जाए तो फिर आने की आवश्यकता नहीं रहती।'

'महानन्द जी यह तुम व्यर्थ उच्चारण कर रहे हो। इसमें कोई सात्विकता नहीं मानी जाएगी।'

पूज्य महानन्द जी — 'भगवन् ! यह तो आप ही जान सकते हैं कि आपके वाक्यों में सात्विकता है या नहीं है। हास्य.....'

'महानन्द जी ! ऐसा नहीं कहा, किसी द्वितीय महान् आत्मा के विचार तुम्हारे समक्ष निर्णय किए होंगे। अन्तःकरण देवताओं की संज्ञा में जाने का विषय है मोक्ष में जाने का विषय नहीं। यह तो कहा था कि आत्मा को ज्ञान स्वतः रहता है और यह परमात्मा के आनन्द में रमण करता रहता है।'

पूज्य महानन्द जी — 'चलो भगवन् !'

तो मुनिवरो ! देखो अभी-अभी हम देवयान के सम्बन्ध में उच्चारण कर रहे थे, यह भी निर्णय कराते चले जायें कि **परमात्मा जिन ऋषियों को वेदों का ज्ञान देता है वह ऋषि भी देवता कहे जाते**

हैं, जब यह प्रलय काल आता है उस समय सूर्य नहीं रहता, चन्द्रमा नहीं रहता, लोक लोकान्तर नहीं रहते, पृथ्वी मण्डल नहीं रहता यह सब कुछ शान्त हो जाता है। सूक्ष्म परमाणुओं में इसका रूपान्तरण हो जाता है। रूपान्तर हो जाने के पश्चात् जैसा मैंने किसी समय निर्णय भी दिया होगा, आज भी मुझे परमपिता की अनुपम कृपा से सौभाग्य प्राप्त हो रहा है **प्रलय काल में देवयान भी नहीं रहता।**

पूज्य महानन्द जी — ''तो भगवन् ! जब अन्तरिक्ष, यह सब कुछ शान्त हो जाता है क्या देवलोक समाप्त नहीं होता?''

सुनो बेटा ! पहले उस वाक्य को पूर्ण श्रवण कर लिया करो।

पूज्य महानन्द जी — ''कृपा कीजिए भगवन् !''

महानन्द जी ! जैसे प्रकृति सूक्ष्म रूप से परमात्मा में रमण करती है इसी प्रकार यह आत्मा भी परमात्मा के आंगन में रमण करता है। जब फिर सृष्टि आरम्भ होती है तो प्रकृति अपने रूपों में आ जाती है और देवात्मायें प्रकट हो जाती हैं और प्रकट होकर उसी नियम से उस महान् विज्ञान का प्रसार करती हैं जो नियम सृष्टि में पूर्व थे। वह देवता उसी प्रकार परमात्मा की सहायता से वेदों का ज्ञान इस संसार में प्रकट कर देते हैं यह महान् यहाँ देवता और देवकन्याएँ हैं तो मुनिवरो ! ज्ञान-विज्ञान पूर्व सृष्टि के आधार से ऋषि-मुनियों के द्वारा सृष्टि के आरम्भ में प्रकट होता है।

पूज्य महानन्द जी — ''भगवन् ! बहुत से व्यक्ति ऐसा कहते हैं कि जितना मनुष्य का आज विकास हो रहा है उतना विकास पूर्व नहीं था। इस वाक्य की आप कहाँ तक चुनौती देते हैं।

महानन्द जी ! इस वाक्य की कहाँ तक चुनौती दें? जहाँ तक तुम कहो वहाँ तक देते हैं।

पूज्य महानन्द जी — ''भगवन् ! जो यथार्थ चुनौती हो दे दीजिए।''

महानन्द जी ! हमारे यहाँ ऐसा माना गया है कि सृष्टि के प्रारम्भ से आर्य आये हैं, **आर्य कहते हैं, श्रेष्ठ को,** जो श्रेष्ठ हैं उसके द्वारा ज्ञान और विज्ञान दोनों होंगे आज से कई गुना प्रकाश पूर्व भी हो सकता है और था भी, आज भी विकास है पूर्व भी विकास था परन्तु जो विकास त्रेता काल में था वह द्वापर में नहीं और जो द्वापर में वह महाभारत काल के पश्चात् न रहा जैसा मुझे महानन्द जी ने निर्णय कराया। आज के प्रकाश का मुझे कोई ज्ञान नहीं परन्तु अनुमान से प्रकट कर सकता हूँ कि आज जितना विकास है यह कोई महत्त्वदायक नहीं। यह वह विकास है जिसमें प्रत्येक मानव प्रत्येक देवकन्या चिन्तित होता चला जा रहा है। आज उस विकास की आवश्यकता है जो त्रेता में था जहाँ देखो महानन्द जी के कथनानुसार राष्ट्र को राम राज्य बनाने की योजना सोची जा रही हो, जहाँ गुरुओं का और आर्यों का एक महान् प्रदर्शन कराया जा रहा हो उसको विकास कहते हैं। जिस विकास में ज्ञान-विज्ञान से मनुष्य अपने जीवन का मन्थन करता हो उसको शान्ति का विकास कहते हैं, उसको मनुष्यत्व का विकास कहते हैं।

मुनिवरो ! जब यहाँ आपस में मतभेद हुआ और ऋषियों का शासन कुछ सूक्ष्म बना उस समय स्वायम्भुव मनु महाराज ने यहाँ आकर राष्ट्र का विधान बनाया। बेटा ! तुम उनके वचनों को स्वीकार करो और देखो तो तुम्हें ज्ञात हो जायेगा कि मनु महाराज ने जो राष्ट्र का निर्माण किया उस समय कितना विकास था, उस विकास को जानने के लिए मानव को लालायित होना चाहिये और उस विकास को पुनः लाना चाहिये। वह वास्तविक विकास था जिस विकास में एक-दूसरे के शत्रु हों और व्यभिचार की लहर दौड़ती चली जा रही हो क्या उसको तुम विकास कहोगे? या सदाचार को विकास कहोगे? तुम्हारे वाक्यों से यह अवश्य मानना चाहिये कि आज भी विकास है परन्तु पूर्व के विकास से सन्तुलन नहीं करना चाहिये।

मुनिवरो ! महानन्द जी से ऐसी भी सूचना मिली है कि आज का समाज यह कहता है कि पूर्व का ऋषि मण्डल, पूर्व का मानव मांस

का भक्षण करता था। आज के संसार को इस भ्रान्ति में नहीं जाना चाहिये। आज मैं यह जानना चाहता हूँ कि जब परमात्मा ने यह नाना वनस्पतियाँ व फल आदि हमें दिए हैं तो क्या इसको पान करके मनुष्य जीवन नहीं रह सकता? क्या इनको पान करने से बुद्धिमान नहीं बन सकता? तो मुनिवरो ! वनस्पतियों का आहार करके, सोमरस का पान करके हमारे पूर्वज ऋषि बनें। आज हमें उनके जीवन पर विचार करना चाहिए। हमें महर्षि बाल्मीकि के जीवन की कैसी महानता प्राप्त होती कि उन्होंने राम रमेती शब्द की याचना करते-करते अपने शरीर पर महान् जीवों को अपना गृह बनाने दिया हो और शरीर में अस्थियों का पिंजरा और महान् प्राण रह गया हो। आज हमें उन ऋषियों को कितनी महानता देनी चाहिए। आज का हमारा यह विषय नहीं आज तो हम देवताओं की चर्चा कर रहे थे। अरे मानव ! आज तुझे देवता बनना है।

मुनिवरो ! देवता यह भी हैं और देवता यह भी हैं जैसे अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी यह सभी देवता माने गए हैं। चन्द्रमा हमें कान्ति देता है, सूर्य प्रकाश देता है। अग्नि भी हमें प्रकाश और उत्साह देती है, पृथ्वी हमें वनस्पतियाँ देती है, जल भी देवता है जो महान् वनस्पतियों को उत्पन्न करता है, हमारे शरीर को चलाता है, इन देवताओं की भी पूजा करनी चाहिए।

तो मुनिवरो ! यह सब कुछ हमारा जीवन है। इसके ऊपर पुनः से विचार करना चाहिए और देखना चाहिए कि **हम देवताओं की पूजा करने से देवता बन सकते हैं।** यह आज का हमारा आदेश है।

पूज्य महानन्द जी — 'धन्यवाद ! भगवन् ! कहा तो सुन्दर है परन्तु भ्रान्तियाँ हैं।'

'क्या?'

पूज्य महानन्द जी — 'भगवन् ! हम यह जानना चाहते हैं कि इस समय देवलोक में कितनी आत्माएँ होंगी?'

हास्य के साथ...अरे ! सुनो मूर्खानन्द की वार्ता। कहाँ से लाए हैं वार्ता की भ्रान्ति हो रही है कि देवयान में कितनी आत्माएँ हैं। महानन्द जी ! इसकी गणना तो किसी काल में की नहीं।

पूज्य महानन्द जी — 'भगवन् ! जब आपने गणना ही नहीं की तो आपने उच्चारण क्यों किया?'

हास्य के साथ...'महानन्द जी इसका अभिप्राय यह नहीं इसका उत्तर तो किसी द्वितीय काल में दिया जाएगा।'

पूज्य महानन्द जी — 'भगवन् ! कल।'

'बेटा ! कल नहीं। किसी द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ काल में देखा जाएगा।

पूज्य महानन्द जी — हाँ भगवन् ! न भी दो यह भी तो हो सकता है।

हास्य के साथ...हाँ बेटा ! यदि इसकी गणना न हुई तो न भी दिया जाएगा। इसमें क्या है।

पूज्य महानन्द जी — 'अच्छा भगवन् !'

मुनिवरो ! अभी-अभी मेरे प्यारे महानन्द जी कुछ प्रश्न करते चले जा रहे थे। साधारण सी वार्ता में प्रकट कर दिया कि इसका उत्तर किसी द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ काल में दिया जाएगा। संक्षेप सा उत्तर यह है कि देवता तो न्यून होते हैं परन्तु भोगी संसार में अधिक होते हैं। इन भोगों से उठने वाले बहुत सूक्ष्म होते हैं। पापों को न छूने वाले संसार में सूक्ष्म होते हैं। पापों में आ जाने वाले अधिक होते हैं। बेटा ! तुम्हें यह मानना अनिवार्य है कि देवता न्यून होते हैं। अनुमान से, उच्चारण करने से मिथ्या भी हो सकता है परन्तु देवताओं की गणना करेंगे, किसी स्थान पर अवसर मिलेगा तो निर्णय कराएंगे, आज तो समय आज्ञा नहीं दे रहा है, आज तो समय ही समाप्त हो चुका है और बेटा ! अभी तुम्हारा एक प्रश्न रह ही चुका है।

पूज्य महानन्द जी — देख लो भगवन् ! अभी तो आपका बहुत समय है, यदि इसकी अधिक व्याख्या है तो कल ही उत्तर देना। भगवन् ! जैसा मैंने कल कहा था कि बुद्धिमान तो उसको कहते हैं जो संक्षेप में उत्तर दे दे, आप विस्तार में क्या, कुछ संक्षेप में उत्तर दे दीजिए, कल इसका विस्तार कर दीजिएगा।

हास्य के साथ...'बेटा ! कल ही विस्तार हो जाए इसमें तुम्हारी कुछ हानि तो नहीं।'

पूज्य महानन्द जी — 'भगवन् ! हानि तो नहीं परन्तु जब आपने यह कहा था कि कल दोनों प्रश्नों का उत्तर मिल जाएगा तो दोनों का देना ही चाहिए था।'

'बेटा ! यह तो हमने नहीं कहा। तुम कैसे मिथ्या उच्चारण कर रहे हो? यह कहा था कि कल का कल देखा जाएगा।'

पूज्य महानन्द जी — 'तो भगवन् ! हम उससे अनुमान लगा लेते हैं कि गुरुजी कल दोनों प्रश्नों का उत्तर अवश्य दे देंगे।'

हास्य के साथ...'बेटा ! तुम अधिक विनोद न किया करो, इससे तुम्हारी हानि हो जाएगी।'

पूज्य महानन्द जी — 'अच्छा भगवन् !

तो मुनिवरो ! अभी-अभी हमारा वाक्य चल रहा था। महानन्द महानन्द जी कुछ विनोद की वार्ता प्रकट करते चले जा रहे थे। इनके प्रश्न का विस्तार से उत्तर तो कल ही दिया जाएगा परन्तु इतना अवश्य कह सकते हैं कि **सृष्टि के आरम्भ में चारों वेद चार ऋषियों से प्रकट हुए, परमपिता परमात्मा ने उन्हें विशेष ज्ञान दिया,** चारों वेदों का संसार में प्रकाश हुआ। इसके पश्चात् ज्यों-ज्यों समय आया ऋषियों ने इन चारों वेदों को सँहिता रूप में लाए, क्यों लाया गया, कैसे लाया गया? इसका उत्तर किसी द्वितीय काल में दिया जाएगा, यह कह सकते हैं कि **हमारे आचार्यों ने इन चारों वेदों की 1127 शाखाओं की**

गणना कराई है, जिनमें से महानन्द जी के संकेतानुसार इस समय में 800-900 के लगभग प्रकट हैं, कुछ शाखा लुप्त हो चुकी हैं और उनकी कुछ खोज नहीं मिल रही है। आज का बुद्धिमान तो यह कहता है कि यह मिथ्या है परन्तु आज का बुद्धिमान उस संसार में होता जब हमारे पुस्तकालय के पुस्तकालय शान्त किए गए, जहाँ निधि की निधि अग्नि में भस्म हो गई हों, हो सकता है उस समय यह शाखाएँ भी भस्म हो गई हों।

आज यह माना जाता है कि वेदों का ज्ञान कण्ठस्थ होता है और कण्ठस्थ होकर यह बचा है परन्तु बुद्धिमान को यह भी मानना चाहिए कि एक मानव सब शाखाओं को कण्ठस्थ कर सकता है परन्तु कोई न कोई शाखा अवश्य ऐसी रह जाती है जो कण्ठ नहीं रहती, इसको पुस्तक रूप में लाने में बहुत कठिनाई होती है, इस पर विचार करना चाहिए, विचार करने से इसमें कुछ और ही पाया जाएगा, आज विचार करने से ही हमारा कार्य बनेगा।

मुनिवरो ! रही यह वार्ता जैसा कि हमने पूर्व कहा था कि सृष्टि के आदि ब्रह्मा की व्याकरण में और महर्षि पाणिनी ऋषि के व्याकरण में कुछ भिन्नता है परन्तु आज का बुद्धिमान यह कहता है कि कोई भिन्नता नहीं है। मेरे प्यारे महानन्द जी के कथनानुसार यदि आज का बुद्धिमान उस व्याकरण को देखता कि आदि गुरु ब्रह्मा की व्याकरण की क्या संज्ञा थी तो उसको भिन्न-भेदता ज्ञात हो जाती, इन सब ही वाक्यों पर विचार करना चाहिए। **पाणिनी ऋषि महाराज द्वापर के प्रारम्भ में हुए** परन्तु वेदों का उच्चारण, वेदों की प्रतिक्रियाएँ आज से नहीं अरबों वर्षों से चली आ रही हैं, इन सब ही पर विचार करना चाहिए।

यह भी माना जाए जैसा महानन्द जी कहा करते हैं कि हर युग में पाणिनी ऋषि भी हो सकते हैं, तो यह मूर्खों वाला वाक्य, परन्तु हो सकता है कि हर युग में पाणिनी ऋषि महाराज हों, परन्तु ऐसा नहीं,

पाणिनी ऋषि और पूर्व की व्याकरण में कुछ भिन्नता है जिसका कल कुछ विस्तार से विवेचन करेंगे, कुछ अपने विचार प्रकट करेंगे और कुछ ऋषियों के भी मन्तव्य देंगे, अब हमारा आदेश समाप्त होने वाला है।

मुनिवरो ! आज का हमारा मुख्य उद्देश्य देवताओं के सम्बन्ध में था, हमारा यह वाक्य अभी पूर्ण तो नहीं हुआ। यह मूर्ख महानन्द पता नहीं कहाँ से आ जाता है, इनके प्रश्नों की पोथी की पोथी बन जाती है, उन पोथियों को उच्चारण करना नहीं चाहते, देवताओं का कुछ विवरण रह गया है, समय मिलेगा तो द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ काल में प्रकट करेंगे।

पूज्य महानन्द जी — 'भगवन् ! चतुर्थ में क्या आप इन वाक्यों को प्रकट ही न करना, क्या आप कल कहीं जाएँगे? इन सब वाक्यों को कल प्रकट कर देना।'

हास्य के साथ...'अच्छा बेटा ! देखा जाएगा।'

मुनिवरो ! हमारी यह वार्ता अब समाप्त हो गई है। **आज का हमारा मुख्य आदेश देवताओं के सम्बन्ध में था, देवता बनने का आदेश था।** अब यह आदेश समाप्त हो चुका है, कल समय मिलेगा तो शेष वार्ता कल होगी। अब वेदों का पाठ होगा, इसके पश्चात् वार्ता समाप्त हो जाएगी।

वेद पाठ----------

अच्छा भगवन्!

आनन्दित रहो!

दिनाँक : 28 जुलाई, 1963

समय : रात्रि 8.30 बजे

स्थान : मालवीय नगर, नई-दिल्ली

।। ओ३म् ।।

जीवन और मृत्यु

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान जाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गये हैं और जितना भी यह जड़ जगत् अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आता रहता है। क्योंकि उस परमपिता परमात्मा का अनन्तमयी विज्ञान है और अनन्तमयी ज्ञान है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से अन्वेषण करता चला आया है। कहीं उसके ज्ञान के ऊपर अन्वेषण हो रहा है और कहीं विज्ञान के ऊपर हो रहा है। कहीं अणु और परमाणु के ऊपर अन्वेषण हो रहा है और कहीं विभु के ऊपर विचारा जा रहा है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा विभु है और आत्मा को अणु के रूप में वर्णित किया गया है। परन्तु कहीं-कहीं विचारवेत्ताओं ने यह कहा कि आत्मा अणु के रूप में तो है परन्तु विभु के रूप में भी मानो कहीं-कहीं यह दृष्टिपात आती रही है। परन्तु वैदिक मन्त्र यह कहता है वसम् ब्रह्मा विभु वर्णस्सुतम्-वेद का मन्त्र यह कहता है कि परमपिता परमात्मा एक विभु है और यह जो आत्मतत्त्व है अणु के रूप में वर्णित माना गया है परन्तु आचार्यों की भिन्न-भिन्न प्रकार की धारणा रही हैं। परन्तु उन धारणा के मूल में तो नहीं जाऊँगा केवल विचार विनिमय यह कि मानव अपने ऊपर अन्वेषण करता रहा है और विभु और अणु के सम्बन्ध को उन्होंने अवर्चनीय विषय को उद्गीत गाते हुए अपने में मौन हो गये हैं।

अणु और विभु

एक समय महर्षि जालवी जी से गाड़ीवान रेवक ने यह कहा था कि महाराज यह आत्मा अणु है या विभु है? तो उन्होंने बेटा! विवेचना करते-करते अन्त में मौन हो गये थे और जालवी ऋषि ने कहा कि यह अवर्चनीय विषय है और अवर्चनीय जिसका वर्णन नहीं किया जाता क्योंकि वाणी का विषय यह मानो देखो अन्तिम विषय नहीं कहलाता। जो वाणी से मानो देखो इसके ऊपर वाणी अपना नियमन कर रही है जो वाणी का भी वाणी है उसका नाम परमपिता परमात्मा है तो उसका वर्णन नहीं किया जाता। मेरे पुत्रो! देखो यह उच्चारण करके महर्षि जालवी जी अपने में मौन हो गये। गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने कहा कि महाराज आप मौन हो गये हैं? उन्होंने कहा मैं मौन हो गया हूँ क्योंकि परमात्मा का जगत अनन्तमयी है। जब मानव विज्ञान के ऊपर अपनी उड़ानें उड़ने लगता है तो वह नाना देखो सौर मण्डलों में चला जाता है और सौर मण्डलों को आकाश गंगा में ले जाता है और आकाश गंगाओं को निहारिका में ले जाता है और निहारिका को अवन्तिका में ले जा करके वह मौन हो जाता है। ब्रह्माण्ड की रचना का भी अवर्चनीय विषय बन जाता है। मेरे प्यारे! जब मानव देखो इसकी गणना करता है कि रचनाकार रचना के ऊपर विचार-विनिमय देता-देता मानो श्रद्धा के ऊपर चला जाता है और श्रद्धा में जाने के पश्चात् वह हृदय पे आ जाता है और जहाँ हृदय का समावेश होता है वहाँ शान्त हो जाता है परन्तु वहाँ ऋषि यह कहते हैं कि अति प्रश्न करने पर ही मानव की मृत्यु हो जाती है। तो यहाँ मुनिवरो! देखो यहाँ भी आ करके ऋषि अपने में मौन हो जाता है।

महर्षि जमदिग्न आश्रम में मृत्यु पर चिन्तन

परन्तु आज मैं इस सम्बन्ध में विशेषता नहीं केवल विचार विनिमय यह कि हमारा वेद का मन्त्र यह क्या कह रहा है। वेद का मन्त्र कहता है यमम् ब्रह्मा लोकाम् वसुतम् ब्रह्मे प्रत्येक मानव परम्परागतों

से ही मृत्यु के सम्बन्ध में चिन्तन करता रहा है और यह विचारता रहा है कि यह मृत्यु क्या है जिसके ऊपर मानव व्याकुल हो रहा है। प्रत्येक मानव देखो व्याकुलता में निहित हो रहा है कोई कहता है मृत्युञ्जयम् ब्रह्मा वणस्सुतम् देवत्वाम् परन्तु जब यही विचार दार्शनिकों में जाता है तो दार्शनिक अपना प्रसंग ले करके कहता है कि यह मृत्यु क्या है जिसके ऊपर माता व्याकुल हो रही है। मानो देखो पितृ भी व्याकुल हो रहे हैं, जितना भी सम्बन्धी कुटम्ब है वह सब व्याकुल हो रहा है। तो मेरे पुत्रो! देखो इस प्रकार का विचार-विनिमय होता हुआ परन्तु अन्त में मृत्युम् ब्रह्मा लोकाम्। आओ बेटा! देखो मैंने यह वाक् कई कालों में प्रगट किया है। इन वाक्यों की मैं पुनरुक्तियाँ करता रहता हूँ कि मृत्यु क्या है। बेटा! मुझे वह सभा और ऋषि-मुनियों का विचार स्मरण आ रहा है।

मेरे प्यारे! देखो मुझे वह काल स्मरण है जब महात्मा जगदग्नि ने अपने यहाँ एक सभा का आयोजन किया था और उस सभा में नाना ऋषि, ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्म जिज्ञासु और ब्रह्मवर्चोसी मानो यह सर्वत्र विद्यमान थे। जिसमें मेरे प्यारे! महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक और महर्षि दालभ्य और गाड़ीवान रेवक और महर्षि वैशम्पायन और मुनिवरो! देखो देवम् ब्रीही और जालवी और महर्षि पिप्पलाद यह सब ब्रह्म कोटि के महापुरुष थे। परन्तु देखो इसमें महर्षि देखो ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी सुकेता और महर्षि पणपेतु ऋषि महाराज, चाक्राणी गार्गी, सोमवृतिका यह सब मानो देखो ब्रह्म की जिज्ञासा वाले थे और ब्रह्मवर्चोसी में मेरे पुत्रो! देखो ब्रह्मचारी ब्रहे ब्रह्मचारी लिलित और भी नाना ऋषि और इसमें देखो पारेत्वर ऋषि सम्भूति अमृताः और देवी कृतकेतु मेरे प्यारे! यह सब मानो देखो वह ब्रह्म को तो जान गये थे कि ब्रह्म है परन्तु इसी दृष्टि को उनसे वह सभा में पहुँचे कि हम ब्रह्म का निर्णय और चाहते हैं। तो मेरे पुत्रो! देखो यह तीन कोटि के ऋषि-मुनि महर्षि जमदग्नि आश्रम में एकत्रित हुए। जब एकत्रित हुए तो मुनिवरो! देखो महर्षि जमदग्नि ने एक वाक् उच्चारण किया और ऋषि ने एक वेद मन्त्र का उद्गीत

गाते हुए कहा अमृताम् मृत्यु भविताम् ब्रव्हे वर्णस्सुतम् ब्रह्मा। मेरे पुत्रो! देखो ऋषि ने यह कहा क्या हे ऋषि-मुनियों मैंने तुम्हें इसलिए एकत्रित किया है क्या तुम्हें भयँकर वनों में तुम तप कर रहे हो तुम्हारा बड़ा अनुभव है और तुमने तपस्या आत्मा और परमात्मा को निकटतम से दृष्टिपात किया। तुम चार प्रकार की बुद्धियों वाले हो जैसे बुद्धि, मेघा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा क्योंकि देखो बुद्धि से तुम जानते रहते हो और मेघा से उसका अनुभव करते हो और ऋतम्भरा में मौन हो जाते हो अनुभव करके और प्रज्ञा में तुम देखो परमात्मा का साक्षात्कार दर्शन करते हो। मेरे पुत्रो! उन्होंने कहा सुनीता बुद्धि को कहा जाता है जब तुम्हें सुमति हो जाती है तो यह ब्रह्माण्ड तुम्हारे लिए खिलवाड़ हो जाता है। परन्तु हम यह जानना चाहते है—वेदमन्त्र यह कहता है यमम् मृतम् ब्रह्मा लोकाम्। हमारा जो प्रसंग है वेदमन्त्र में जहाँ प्रसंग आता है वहीं प्रश्न और उत्तर दोनों हैं। प्रश्न कर रहा है वेदमन्त्र की मृत्यु क्या है? मैं मृत्यु को जानने के लिए उपस्थित हूँ क्योंकि यह संसार व्याकुल है। जब मानव का अपने द्वार से विच्छेद होता है तो उसे कहते हैं यह शरीर मृतक हो गया है माता व्याकुल होने लगती है, पत्नी व्याकुल हो जाती है जितना ऋणबन्धी संसार है यह मानो देखो व्याकुलता में अपने प्राणों की अवृत्ति कर लेता है। तो मैं जानना चाहता हूँ कि मृत्यु क्या है? मृत्यु के सम्बन्ध में मानो देखो तपस्वी अपना निर्णय दे सकते हैं और मैं यह जानना चाहता हूँ कि मृत्यु क्या है? मेरे पुत्रो! देखो इस वाक् को ले करके महात्मा जगदग्नि यह प्रश्न करके अपने में मौन हो गये। मौन हो जाने के पश्चात् ऋषि मुनि बेटा! एक दूसरे में मानो मौनता को प्राप्त हो गये। विचारवेत्ताओं ने अपना वाक् प्रगट किया सम्भूति ब्रह्मणा वृत्यम् देवाः यह वेदमन्त्र बेटा! देवर्षि नारद मुनि ने उच्चारण किया परन्तु देखो उन्होंने कहा कि हे ब्रह्मवेत्ताओं तुम इसका उत्तर दो।

चाक्राणी गार्गी का विचार

चाक्राणी गार्गी उपस्थित हुई और गार्गी ने कहा क्या कि हे ब्रह्मवेत्ताओं यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं ऋषि के प्रश्नों का कोई उत्तर

दे सकूँ? उन्होंने कहा अवश्य दीजिए। उन्होंने कहा हे ऋषि अमृतम् मेरे विचार में तो यह आता है कि शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु है। शरीर का त्यागना, आत्मा और शरीर का दोनों का पृथक्-पृथक् हो जाना ही मृत्यु है।

ब्रह्मचारी कवन्धि की जिज्ञासा

मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मचारी कवन्धि ने कहा क्या हे प्रभु एक समय कात्यायन के गृह में मैं और मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जब रात्रि समय हमने विश्राम किया तो कात्यायन की गृहणी ने यह प्रश्न किया कि मृत्यु क्या है? तो उन्होंने शरीर का और आत्मा का पृथक होना मानो यह उत्तर दिया। कात्यायन की देवी ने यह कहा कि देखो यदि शरीर और आत्मा का दोनों का पृथक्-पृथक हो जाना है तो यह जो पृथक हो गये हैं मृत्यु नहीं बनती इससे। उन्होंने कहा जब मृत्यु नहीं बनती तो हम मौन हो गये। परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव भी मौन हो गये थे। परन्तु अमृतम् ब्रह्मा लोकाम् तो विचार आता है कि शरीर को त्यागना मृत्यु नहीं है। विचारने से प्रतीत हुआ कि आत्मा का विनाश नहीं होता जब आत्मा का विनाश नहीं होता, अव्ययों का भी विनाश नहीं होता तो यह मृत्यु शब्द नहीं बनेगा। तो मेरे प्यारे! देखो चाक्राणी तो अपनी स्थली पर मौन हो गई।

महर्षि पिप्पलाद का मृत्यु पर निर्णय

इतने में महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज उपस्थित हुए और पिप्पलाद जी ने कहा कि वेदमन्त्र कहता है अमृताम् भूतम् ब्रह्मणे जानाम् भवो सम्भवप्रव्हे असुतम् देवाः अमृतम् ब्रह्मे कृतो। हे अमृतो, हे ब्रह्मवेत्ताओं मेरे विचार में यह आता है कि मृत्यु का अभाव है संसार में—अभावाम् अभावाम् भूतम् ब्रह्मा इसका अभाव है। **ब्रह्म के ज्ञान में इसका अभाव हो जाता है मृत्यु का।** मेरे प्यारे! देखो जब उन्होंने यह कहा कि मृत्यु का अभाव, ब्रह्म के अभाव में मृत्यु का अपना कोई अस्तित्व नहीं रहता तो इससे यह प्रतीत हुआ कि ब्रह्मज्ञान का नाम

जीवन है और ब्रह्मज्ञान न होना ही मानो देखो अन्धकार और रात्रि कहा जाता है। ऋषि ने अपना निर्णय दे दिया परन्तु नाना प्रकार के प्रश्न आने लगे। उन्होंने कहा यह व्याकुलता क्यों है? उन्होंने कहा ज्ञानाम् भूतम् ब्रह्मा स्वारताम् इदं सुतम् देवाः उन्होंने कहा यह जो व्याकुलता है यह देह से विच्छेद होने का नाम ही मानो देखो अपार कष्टों में मानव चला जाता है। कोई वस्तु का मिलन होता है और मिलन होने के पश्चात् उसका विच्छेद हो गया, उसका रूपान्तर हो गया है उस रूपान्तर का देखो रूपान्तर के साथ में, स्थूल के साथ में ही मानो देखो नाना प्रकार का संसार का क्रियाकलाप लगा हुआ है, ममता का एक क्रियाकलाप लगा हुआ है तो देखो काम क्रोध, लोभ, मोह की एक मानो कृतियाँ लगी हुई हैं। यह मुनिवरो! देखो ऋषि पिप्पलाद ने यह उत्तर दिया। उत्तर दे करके ऋषि अपने में मौन हो गये और संध्या का काल हो गया। संध्या का काल होते ही मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण है क्या सभा मुनिवरो! देखो अपने-अपने कक्ष में जा पहुँची संध्या का काल हो गया।

महर्षि पिप्पलाद शकुन्तका सम्वाद

पिप्पलाद मुनि का आश्रम बहुत ही निकटतम था और वह पिप्पलाद मुनि बेटा! देखो आश्रम में प्रवेश किया उन्होंने क्योंकि उन्होंने इस आसन को त्याग करके निकटतम आश्रम में पहुँचे उनकी पत्नी का नाम शकुन्तका का था और शकुन्तका दृष्टिपात करके ऋषि को बड़ी व्याकुल हो गई क्योंकि बहुत समय के पश्चात् गृह में उनका पदार्पण हुआ। ऋषि ने देवी से कहा देवी तुम व्याकुल क्यों हो रही हो? उन्होंने कहा कि हे प्रभु! मेरा सात वर्षीय पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया है। पिप्पलाद मुनि ने कहा देवी तुम्हें यह प्रतीत है क्या मैं तो मृत्यु का खण्डन करता रहता हूँ, मृत्यु तो अभाव में है मानो उसका कोई भाव नहीं है अभावाम् भूतम् ब्रह्मे देखो मृत्यु को अभाव है जिसका अभाव हो जाता है उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं रहता।

शरीर क्या है

उन्होंने कहा प्रभु यह मैंने स्वीकार किया परन्तु आप ब्रह्म की दृष्टि से निर्णय देते हैं परन्तु यह जो मेरा शरीर है यह क्या है? तो पिप्पलाद जी कहते हैं कि देवी यह परमाणुओं का संघात है। माता के गर्भस्थल में मानो एक बिन्दु है और बिन्दु में शिशु है और शिशु मानो देखो जब माता के गर्भ में जब प्रवेश हो जाता है तो वही शिशु और देखो परमाणु उसे वह अंग-संग हो करके मानो वह परमाणुओं का संघात बना और आगे मुनिवरो! देखो देवत्व आ गया। चन्द्रमा प्रकाश देखो चन्द्रमा अमृत देने लगा, सूर्य प्रकाश के परमाणु देने लगा और मुनिवरो! देखो वायु ने प्राण दे दिया। अग्नि ने तेजोमयी बना दिया उष्ण बनाती रही परन्तु देखो जल ने तरलत्व पदार्श दिया और गुरुत्व पृथ्वी का गुण आ गया। सब देवता उसकी रक्षा करने के लिए तत्पर हो गये। जब वह रक्षार्थी बन गये तो परमाणुओं का संघात हो करके माता के गर्भस्थल में वह परमाणुओं से बलवती हो गया है, वही जगत में आया। मेरे पुत्रों! जगत् में वायु देवता ने उसकी संरक्षण की रक्षा करके माता ने लोरियों का पान कराया और चन्द्रमा ने वही अमृत दिया और सूर्य ने वही ऊर्ज्वा वाला प्रकाश दे दिया। मेरे पुत्रो! देखो यह संसार मानो देखो वायु प्राण का संघात करने लगी। मेरे प्यारे! देखो वह तरलत्व अपने में पदार्थ और गुरुत्व अपने में वृत्तियाँ देने लगा। तो मेरे प्यारे! देखो वह बलवती होने लगा, युवा हो गया और युवा हो करके बेटा! अपने में अपनेपन में समाहित हो गया। परन्तु देखो **यह परमाणुओं का संघात, यह परमाणुओं की प्रतिष्ठा कहलाती है, यह परमाणुओं की प्रतिभा कहलाती है।** मेरे प्यारे! ऋषि पत्नी मौन हो गई और ऋषि पत्नी ने कहा प्रभु चलो यह भी मैंने स्वीकार कर लिया।

परमाणु कहाँ रहता है

परन्तु मैं यह जानना और चाहती हूँ कि जब यह परमाणुवाद इस रूप में नहीं था तो यह परमाणु कहाँ रहता था? उन्होंने कहा यही

परमाणु माता के गर्भस्थल में विद्यमान था। माता के गर्भस्थल में मानो देखो निर्माणवेत्ता निर्माण करता है और निर्माण करने वाला देखो उसी अमृतो से निर्माण कर रहा है मेरी भोली माता उस निर्माणवेत्ता से प्रायः वंचित हो जाती है परन्तु वह वंचित है निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है निर्माणवेत्ता ने जब बाल्य का निर्माण किया हम जैसे शिशुओं का निर्माण किया तो बेटा! इसमें बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दौ सौ दो नाड़ियों का निर्माण किया। मेरे प्यारे! देखो निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है परन्तु मेरी भोली माता को प्रतीत नहीं होता कौन निर्माणवेत्ता है। कहीं बेटा! बुद्धि का निर्माण किया बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा मानो देखो कहीं सुनीता रूप में और कहीं-कहीं मानो देखो रजनी के रूप में विद्यमान रहता है। कहीं मानो देखो वह रजनप्रहा नाना प्रकार के बेटा! बुद्धि के प्रकार माने गये हैं।

विचार आता रहता है जो दृष्टिपात करने वाली वह बुद्धि है और जो बुद्धि से मानो दृष्टिपात कर दे जो क्रिया में लाने वाली उसका नाम मेधा है और मुनिवरो! देखो जो जान करके और उसका अनुभव करता है जैसे लोक-लोकान्तरों को दृष्टिपात करने वाला। मेरे प्यारे! लोक-लोकान्तरों को दृष्टिपात करता रहता है ऋतम्भरावी बन करके मुनिवरो! देखो उन्हें अन्त में अनुभव करता है और प्रज्ञा में जब प्रवेश हो जाता है तो बेटा! ब्रह्माण्ड का दृष्टा बन जाता है, यह ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करने लगता है।

मेरे पुत्रो! देखो वही मानो देखो प्रभु रचनाकार रचना कर रहा है। बुद्धियों का निर्माण किया और मेधा सुनीता में उसको परणित कर दिया। मेरे पुत्रो! देखो माता के गर्भस्थल में निर्माण हो रहा है दो प्रकार के हृदयों का उन्होंने निर्माण किया एक मानो देखो लोवृणी के मध्य में रहता है और एक लघु मस्तिष्क में होता है। हमारे जब प्रभु ने रचना की तो बेटा! देखो रेणकेतु मस्तिष्क का निर्माण किया और उन्होंने लघु मस्तिष्क का निर्माण किया, व्रेतकेतु मस्तिष्क का निर्माण किया और मुनिवरो! देखो उसमें मेधाम् भूतम् मस्तिष्क का निर्माण करके जिसमें भू का दर्शन होता रहता है। तो मेरे प्यारे! उन्होंने चार प्रकार के

मस्तिष्कों का निर्माण किया है और वही देखो जब वह मस्तिष्कों का ज्ञान होता है तो वह ऋषि बन करके बेटा! अपने अन्तः प्राणों को आत्मा के सहित जब ब्रह्मरन्ध में पहुँच जाता है तो बेटा! वह संसार के लोक-लोकान्तरों का स्वामित्व बन जाता है। प्रकृति के ऊपर अपने को निहारता रहता है उसके ऊपर मानो उसका अधिपथ्य हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह क्या मुनिवरो! ब्रह्मणं ब्रह्मा लोकाम् वर्चस्सुतम् देवत्वाम् भू वर्णाः-वेदमन्त्र कहता है क्या मानो देखो प्रभु निर्माणवेत्ता है। माता के गर्भस्थल में शरीर का निर्माण किया है परन्तु मेरी भोली माता उससे वंचित रहती है।

मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मणा जब इस प्रकार ऋषि ने अपना मन्तव्य दिया तो देवी ने कहा हे प्रभु! मैं जब पूज्यपाद गुरुदेव के आश्रम में अध्ययन करती थी तो अध्ययन करने वाले मेरे पिता ने, मेरे आचार्य ने मुझे इन सबका ज्ञान कराया परन्तु मैं यह जानना और चाहती हूँ भगवन् जब यह माता का गर्भाश्य नहीं था तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता था? उन्होंने कहा यही परमाणुवाद मानो कुछ वीरांगना के रूप में था और कुछ वीरत्व के रूप में विद्यमान था। वीरांगना जब इन परमाणुओं की रक्षा करती है तो मानो वह वीरांगना बन करके बेटा! अपने को निर्द्वन्द्व बना लेती है और जब ब्रह्मवर्चोसी ब्रह्म अपने में देखो ब्रह्मचारी पालन करता है तो बेटा! वह ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है, ब्रह्म में मानो ब्रह्म को बरतने लगता है। इसी प्रकार देखो मेरी पुत्री जब इस ब्रह्मचर्य की रक्षा करती हुई मानो देखो वीरांगना बनती है तो बेटा! देखो सर्पराज भी चरणों की वन्दना करते हैं और मृगराज भी और सिंहराज मुनिवरो! देखो चरणों में ओत-प्रोत हो जाते हैं।

वीरांगना के दर्शन

विचार आता है, मुझे स्मरण आता रहा है जब बेटा! हम विद्यालय में अध्ययन करते थे, साधना करते थे तो पूज्यपाद गुरुदेव उस समय बोले क्या चलो आज तुम्हें मैं भ्रमण कराएँ। तो जब भ्रमण करने के

लिए पहुँचे तो देखो चाक्रार्णी गार्गी सामगान का अध्ययन कर रही थी जब सामगान का अध्ययन कर रही थी तो निर्जन वन में देखो भयँकर वनों में कोई प्राणी नहीं है, कोई मानव नहीं था, कोई ऋषि नहीं था परन्तु वह गान गा रही है अनुदात्त, उदात्त से और मालापाठ में गान गा रही है परन्तु देखो वह वीरांगना बन रही है। मेरे प्यारे! सर्पराज चरणों की वन्दना कर रहे हैं, सर्पराज उन शब्दों को वैखरी वाणी को अपने में ग्रहण कर रहे हैं, सिंहराज विद्यमान हैं। तो मेरे प्यारे! देखो वहाँ शान्त हो करके पूज्यपाद गुरुदेव ने हमें निर्णय कराया क्या हे पुत्रवत् यह देखो वीरांगना के लक्षण हैं। यह वीरांगना है जब प्राणी देखो इन परमाणुओं की रक्षा करता है तो वह मानो देखो अपने से मुक्त हो जाता है। वह अपने संसार के अव्ययों से मुक्त हो जाता है परमात्मा के राष्ट्र में चला जाता है और परमात्मा के राष्ट्र में किसी का भय नहीं होता, परमात्मा के राष्ट्र में निर्द्वन्द्व हो जाता है। तो मेरे पुत्रो! देखो इसी प्रकार यह वीरांगना अपने में निर्द्वन्द्व हो गई है, इसे किसी का अवृत नहीं है यह परमात्मा के आश्रित हो गई है। तो मेरे प्यारे! देखो वह वैखरी वाणी में गान गा रही है, स्वर ध्वनियाँ हो रही हैं परन्तु सिंह और मृगराज उन ध्वनियों को श्रवण कर रहे हैं। तो मेरे प्यारे! देखो जब श्रवण कर रहे हैं तो आनन्दवत् छा रहा था, विश्वम् ब्रह्मा लोकाम् बेटा! विश्व में लोक की चर्चाएँ होती रहती हैं।

मेरे प्यारे! देखो जब सभा विसर्जन हुई, वेद पाठ समाप्त हुआ तो देखो सर्पराज भी अपने आश्रम को चला गया और सिंहराज भी अपने आश्रम का चला गया। परन्तु जब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा हे देवी यह क्या कारण है जो सिंहराज अहिंसक प्राणी हैं और तुम्हारे चरणों की वन्दना कर रहे थे? उन्होंने कहा हाँ प्रभु! यह क्या कारण है? उन्होंने कहा अमृतम् ब्रह्मा देवत्वाम् क्या जब वाणी में अमृत हो जाता है और वाणी में अमृत जब होता है जब अहिंसा परमोधरम का पालन करता है, मानो देखो वह उसकी वाणी में अमृत हो जाता है। जब हिंसा उसके हृदय में ही नहीं रहती तो वाणी का जब नृत होने लगता है वेदमन्त्रों

का स्वर आ जाता है। जब वह जटा पाठ में, धन पाठ में गाता है तो सिंहराज भी चरणों की वन्दना करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो पूज्यपाद गुरुदेव ने जब हमें यह दृष्टिपात कराया तो हमारा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हुआ।

ब्रह्मचारी कौन है

मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने कहा देवी यह परमाणु मानो वीरांगना इन परमाणुओं की रक्षा करने वाली वीरांगना अपने में देखो अहिंसा में परणित हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मचारी जब इन परमाणुओं की रक्षा करता है तो वह देवताओं की सभा में सुशोभनीय हो जाता है और देवता बन जाता है और देवता बन करके मुनिवरो! देखो वह गान गाता है। ब्रह्मा ब्रह्मे व्रतम् मानो देखो जब ब्रह्मचारी बन करके वह ब्रह्मवर्चस्व बन जाता है, ब्रह्मवर्चोसी उसे कहते हैं जो ब्रह्म का चिन्तन करता है। मेरे प्यारे! जब ऋषि से यह प्रश्न किया क्या यह ब्रह्मचारी कौन है, देवी ने कहा यह ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने कहा ब्रह्मचारी वह है जो ब्रह्म के ऊपर चिन्तन करता है। उन्होंने कहा ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारी ही चिंतन करता है। यह ब्रह्मचारी कौन है? जब पुनः प्रश्न किया उन्होंने कहा ब्रह्मचारी वह जो रक्षार्थी है जो अपने शरीर की रक्षा करता है, मन, कर्म, वचन की रक्षा करता है वह ब्रह्मचारी है। पुनः प्रश्न किया कि महाराज यह ब्राह्मण कौन है? उन्होंने कहा जो ब्रह्म को जानने वाला है वही ब्राह्मण है, वही ब्रह्मचारी है। उन्होंने कहा हे प्रभु यह ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने कहा जो एक-एक श्वास को ब्रह्म सूत्र में पिरोना जानता है, जो मानव माला के मनकों की भाँति इसको माला बना लेता है वही मुनिवरो! ब्रह्मचारी है। ब्रह्मवर्चस्सुतम् ब्रह्मा ब्रह्मवर्चो समब्रहे देवाः वही तो देखो ब्रह्मचारी वही ब्रह्म की चरी को चरता है और वही मुनिवरो! ब्रह्म की आभा को चर करके देखो वही अपने में मानो देखो वह विज्ञानवेत्ता बन जाता है। नाना अणु और परमाणु में प्रवेश हो जाता है और ब्रह्म और चरी को दोनों को जानने लगता है। ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को और चरी कहते हैं प्रकृति को यह दोनों को जानता हुआ

मुनिवरो! देखो ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है। तो वही ब्रह्मचारी है और वही ब्रह्मचारी देवताओं की सभा में बेटा! सुशोभनीय होता है। वह जब ब्रह्म का बखान करता है ब्रह्म को ही मानो देखो एक स्थली में दृष्टा बन जाता है वह ब्रह्मचारी है। मेरे प्यारे! वह ब्राह्मण है जो एक-एक कण-कण में ब्रह्म की चर्चा करता है वह ब्राह्मण कहलाता है।

सात प्रकार का अन्न

मेरे प्यारे! देखो वेद के ऋषि ने जब इस प्रकार अपनी देवी से यह वर्णन किया तो देवी बड़ी मौन हो गई और मौन हो करके बोली प्रभु आप को धन्य है आप ने मेरे अज्ञान को दूरी कर दिया है। जब देवी ने यह कहा तो पिप्पलाद मुनि से यह कहा—पुनः प्रश्न किया कि महाराज यह मैंने जान लिया कि ब्रह्मचारी और ब्रह्म मनम् व्रते मैं भगवन् यह और जानना चाहती हूँ क्या भगवन् देखो यह अमृतम् जब यह देखो वीरांगना और ब्रह्मचारी भी नहीं होता तो यह परमाणुवाद कहा रहता है? जब मुनिवरो! देखो देवी ने यह प्रश्न किया तो उन्होंने कहा हे देवी जब मानो देखो यह भी नहीं होता जब यह परमाणुवाद कहाँ रहता है तुम्हारा यह प्रश्न है। जब वीरांगना नहीं होती, ब्रह्मवर्चोसी ब्रह्मचारी भी नहीं होता ब्रह्म देखो वह वीरत्व नहीं होता तो यही परमाणु मानो देखो सृष्टि के पिता ने सृष्टि के प्रारम्भ में सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया। बेटा! जब सृष्टि का सृजन हुआ इस जगत् की रचना की तो प्रभु ने सात प्रकार के अन्न को रचा।

दो प्रकार का अन्न

सबसे प्रथम बेटा! देखो अन्नादन् भूतम् मेरे पुत्रो! देखो एक ही पौधा है उस पर दो प्रकार का अन्न विद्यमान है। एक अन्न को मुनिवरो! देखो मानव पान कर रहा है, एक को पशु पान कर रहा है। पशु पय दे रहा है, मानव ओज और तेज की उत्पत्ति कर रहा है। मेरे पुत्रो! देखो एक ही पौधा है और सृष्टि के पिता ने एक ही पौधे पर दो प्रकार के अन्न की रचना की है और वह दो प्रकार का अन्न है एक अन्न को बेटा! पशु पान करके पय दे रहा है और द्वितीय अपने ओज

और तेज की उत्पत्ति कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो जब इस प्रकार अपने में प्रभु की महिमा का गुणगान गाता हुआ कहता है ऋषि क्या हे देवी एक अन्न को मेरी प्यारी माता भोजनालय में तपा रही है और एक अन्न को पशु पान करके पय और दुग्ध दे रहा है मानो देखो यह प्रभु की महानता है। तो विचारवेत्ताओं ने कहा यह दो प्रकार का अन्न तो यह है।

तीसरा अन्न-हुत

और एक अन्न हुत है जो यजमान अपनी यज्ञशाला में अपनी देवी से कहता है हे देवी आओ हम हुत करेंगे, हम देवताओं को भोज्य देंगे क्योंकि अग्नि देवताओं का मुख है। तो मानो देखो वह स्वाहा स्वाहा कह करके अपनी मानो देखो अपनी भावनाओं, अपने देखो साकल्य को अग्नि के मुख में प्रदान करते हैं। वह अग्नि देवताओं का मुख है देवताजन उस पान करते हैं तो नाना प्रकार की वृष्टि प्रारम्भ करते हैं, उससे नाना प्रकार का अन्न उत्पन्न होता है। यह पृथ्वी नाना प्रकार के मानो व्यञ्जनों वाली बन जाती है तो इसीलिए देखो वह जो हुत है वह भी तीसरा अन्न कहलाया गया है जो अग्नि के मुखारबिन्दु में परणित किया गया है। अग्नि उसे अपने में धारण कर लेती है परन्तु वह सर्व देवताओं को प्रसारण कर देती है वह देवाम् भूतम् अग्नम् ब्रह्मा देवानाम् देवत्वाम् लोकम् वाचस्सुतेः। मेरे प्यारे! देखो यजमान अपनी देवी से कहता है देवी आओ हम देवताओं को हवि देना चाहते हैं जिससे वह हवि हमें ही प्राप्त हो जाए। तो मानो देखो हवि दे करके वह तीसरा अन्न कहलाता है जिससे देवता प्रसन्न हो वायुमण्डल में मानो देखो सात्विक वातावरण हो जाए और देखो वायुमण्डल में देखो प्रदूषण का विनाश हो जाए और वह वायुमण्डल का शुद्धिकरण हो जाए। इस प्रकार मुनिवरो! देखो ऋषि ने अपना मन्तव्य दिया।

चौथा अन्न-प्रहुत

मेरे प्यारे! चौथा जो अन्न है वह प्रहुत कहलाता है। जो

पुरोहितजन होते हैं और पुरोहितजन ही मुनिवरो! देखो गृह को ऊँचा बनाते हैं। वह कहते हैं हे गृह स्वामी, हे गृहस्वामिनी आओ तुम्हारा गृह पवित्र होना चाहिए मानो देखो अपना उपदेश देता है। देखो, वह जो पुरोहित है वह अपना उपदेश देता है उससे राष्ट्र और समाज दोनों ऊँचे बनते हैं। मानो देखो जो बुद्धिमान हैं राजा के राष्ट्र में—जितने बुद्धिमान पुरुष होंगे, विवेकी पुरुष होंगे उतना राष्ट्र ऊँचा बनेगा। जितने राजा के राष्ट्र में विवेकी पुरुषों का व्यवधान होगा, क्रियाशील प्राणी होंगे, ब्राह्मणत्व वेद के जानने वाले जितने भी महापुरुष उतना राष्ट्र ऊँचा बनेगा, गृह ऊँचा बनेगा। माता का गर्भाश्य जब ऊँचा बनता है जब माता के गर्भ से वेद महर्षियों के जन्म होते हैं जो वेद के मर्म को जानने वाले हैं। माता उस समय प्रसन्न होती है जब पुत्र वेदों का उद्गीत गाता हो, विवेक में विचरण करने वाला हो, ब्रह्मज्ञान में ब्रह्म से वार्ता प्रगट करने वाला हो माता का गर्भाश्य उस समय उज्ज्वल होता है। तो बेटा! देखो वह पुरोहित कहलाते हैं—जितने बुद्धिमान पुरुष होते हैं उतना राष्ट्र और समाज में एक आनन्दत्व आने लगता है।

पुरोहित

मेरे प्यारे! देखो महाराजा विश्वामित्र का तुमने नामोकरण श्रवण किया होगा और मुझे बेटा! वह दृष्टिपात आता रहता है उनका जीवन जब उन्होंने बेटा! देखो यहाँ एक अमृतम् देखो यजम् ब्रह्मा लोकाम्। उन्होंने बेटा! एक समय यहाँ धनुर्याग किया था और धनुर्याग में देखो दौ सौ पच्चासी ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे। जब मुनिवरो! देखो अध्ययन की क्रियाएँ प्रारम्भ हुई तो उन्होंने राजकुमारों की आवश्यकता जानी। वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वार पर पहुँचे और वशिष्ठ से कहा कि महाराज मैंने धनुर्याग का आयोजन किया है आपके कथनानुसार परन्तु राजपुरुष नहीं आ रहे हैं। उन्होंने कहा जाओ दशरथ से पुकार करो। उन्होंने, बेटा! राजा दशरथ के यहाँ पहुँचे। राजा दशरथ ने ऋषि का स्वागत किया और यह कहा कि प्रभु बिना सूचना के आपका आगमन हो गया है इस कारण को मैं नहीं जान सका हूँ? उन्होंने कहा कि मैं एक धनुर्याग

कर रहा हूँ और मुझे तुम्हारे राजकुमार चाहिए धनुर्याग को पूर्ण कराने के लिए। राजा ने कहा प्रभु यह बाल्य तो किशोर हैं परन्तु मैं आप के याग को पूर्ण कराऊँगा। उन्होंने कहा नहीं, मुझे राजकुमार चाहिए। मेरे प्यारे! देखो जब यह वाक् दोनों का प्रारम्भ ही हो रहा था इतने में राज लक्ष्मियों को प्रतीत हुआ क्या आज ऋषि का आगमन हो रहा है तो बेटा! कौशल्या इत्यादि सर्वत्र देवियाँ मानो देखो ऋषि के चरणों की वन्दना के लिए आ गई थीं और वहाँ देखो कौशल्या ने कहा भगवन् कहिए ब्रह्मणा व्रतम् देवत्वाम् किस प्रकार आपका आगमन हुआ है? उन्होंने कहा देवी मैं अपना एक याग कर रहा हूँ धनुर्याग और उसको पूर्ण कराने के लिए मुझे ये राजकुमार चाहिए। उन्होंने कहा बहुत प्रिय। उन्होंने कहा राजा राजकुमारों को प्रदान कीजिए। उन्होंने कहा हे देवी मैं इनके याग को पूर्ण कराऊँगा परन्तु यह बाल्य किशोर हैं। माता कौशल्या का यह शब्द था क्या हे राजन्! यदि हमारे गर्भ से उत्पन्न होने वाला पुत्र या मानो देखो बाल्य यदि ऋषि की रक्षा नहीं कर सकता, यागों की रक्षा नहीं कर सकता तो हमारा यह गर्भाश्य दूषित हो जाएगा। मेरे पुत्रो! देखो जब कौशल्या ने ऐसा कहा उन्होंने चारों राजकुमारों को ऋषि को प्रदान कर दिया, जाओ याग को पूर्ण करो। मेरे प्यारे! देखो उन्हें धनुर्विद्या दी, देखो दौ सौ पच्चासी ब्रह्मचारी ऋषि के आश्रम में ज्ञान विज्ञान की शिक्षा ग्रहण करते थे। वह धनुर्याग कहलाता है।

मेरे प्यारे! देखो मैं उच्चारण कर रहा था उनका नाम प्रहुत कहलाता है। वह पुरोहित हैं, वह भी अन्न हैं जिससे राष्ट्र और राष्ट्र का मस्तिष्क ऊँचा बन जाए, जिससे राष्ट्र में वीरत्व आ जाए और गृह ऊँचे बन जाए। बेटा! यह उद्गीत गाता हुआ ऋषि मानो राजकुमारों को लेकर के पुरोहिताम् भूतम् ब्रह्मा। वेदमन्त्र कहता है राजा तेरे राष्ट्र में पुरोहित होने चाहिए जिससे देखो यह अन्न है जो सृष्टि के पिता ने दिया। तो मुनिवरो! देखो यह चार प्रकार का अन्न प्रभु ने सबका साझा अन्न निर्मित किया है। यह सबका साझा अन्न है देखो प्रत्येक प्राणी के लिए मानो देखो अन्नाद कहलाता है।

आत्मा का अन्न

तीन प्रकार का अन्न मेरे पिता ने आत्मा के लिए दिया है। बेटा! मन देखो मन, कर्म और विचार कर्माणां भूतम् कर्माणां धवर्णम् ब्रहे क्रतम् देवाः। मेरे प्यारे! देखो यह जो कर्म है, क्रिया है और मुनिवरो! देखो मन मस्तिष्क को एकाग्र करते हुए तुम मानो देखो क्रियाशील बनोगे तो तुम्हारा विचार ऊँचा बनेगा और विचार का देखो मन, कर्म, वचन का तुम साकल्य बना करके, इन्द्रियों के विषयों का साकल्य बना करके जब तुम विचार से याग करोगे तो मेरे प्यारे! देखो वह **आत्मा में ही आत्मा का याग** होगा। आत्मा में, प्रकाश में प्रकाश का अवधान होगा। मेरे प्यारे! वह आत्मा का कल्याण हुआ—जब ज्ञानरूपी यज्ञशाला में आहुति देना प्रारम्भ करोगे वह यौगिक माना गया है। हमारे ऋषि-मुनियों की यह बड़ी विचित्र एक देन रही है क्या उन्होंने भौतिक और आध्यात्मिकवाद को दोनों को एक दूसरे में रत्त कर दिया है। एक दूसरे में कटिबद्ध करते हुए उन्होंने आध्यात्मिक और भौतिकवाद को एक दूसरे में परणित करते अपने में ओजस किया है। तो मेरे पुत्रो! देखो इस प्रकार ऋषि ने अपना वर्णन किया कि मन, कर्म और देखो विचार मन देखो मनम् ब्रह्मा मन से विचार करो मुनिवरो! देखो प्राणों से क्रिया करो और उसके पश्चात् विचारों का व्यवधान होगा तो आत्मा का कल्याण हो जाएगा। तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने इस प्रकार सात प्रकार का अन्न मन कर्म वचन यह देखो आत्मा का अन्न है जिससे आत्मा बलवान होता है। मन से विचार और देखो क्रिया से क्रिया अमृतम् और देखो उसके पश्चात् जो विचार आयेगा वह महान से महान उत्पन्न होगा। मन, कर्म और विचार अपने में पवित्रता को देखो देने वाला है। तो विचार आता है बेटा! यह सात प्रकार का अन्न सृष्टि के पिता ने मानव के कल्याण के लिए उसको उत्पन्न किया है।

मेरे प्यारे! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार अपना निर्णय दिया तो देवी ने नतमस्तिष्क हो करके कहा प्रभु आपको धन्य है परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ भगवन् जब यह अन्न भी नहीं होता तो यह

परमाणुवाद कहाँ रहता है भगवन्? तो उन्होंने कहा कि जब यह अन्नम् ब्रह्मा वर्णनं ब्रहे देवाम् भूतम् भविते ब्रह्मनम् ब्रव्हा क्रतम् देवाः हे देव अमृतम् ब्रह्मा, हे देवी जब मानो देखो यह अन्न भी नहीं होता तो यह परमाणुवाद मानो देखो कुछ अग्नि के होते हैं। जब यह आत्मा इस शरीर को त्याग देता है उस समय मानो देखो अग्नि के परमाणु अग्नि में चले जाते हैं, जल जल में प्रवेश कर जाता है, गुरुत्व पृथ्वी में चला जाता है और यह प्राण मानो वायु में प्रवेश कर जाता है, अवकाश अन्तरिक्ष में चला जाता है और आत्मा अपने चित्त के मण्डल को ले करके अपने किए हुए क्रियाकलापों को यह मानो वायु में प्रवेश कर जाता है, यह अपने चित्त के मण्डल में चला जाता है। तो देवी न तो आत्मा का विनाश होता है और न परमाणुवाद का विनाश हुआ है तो मैं यह जानना चाहता हूँ मृत्यु है क्या संसार में। मानो न तो अग्नि का विनाश हुआ है, न जल का हुआ है, न मानो देखो यह गुरुत्व पृथ्वी का हुआ और प्राण प्राण में वायु में प्रवेश कर गया है तो देवी मैं जानना चाहता हूँ मृत्यु है क्या? तो देवी नतमस्तिष्क हो गई और देवी ने कहा प्रभु आपको धन्य है आप ने मुझे प्रकाश में पहुँचा दिया है। अन्धकार में मैं सदैव रमण कर रही थी मेरा जीवन प्रकाश में चला गया। तो मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहा है क्या ऋषि अमृतम् बेटा! देखो देवी मौन हो गई। उन्होंने कहा धन्य है प्रभु आपने मानो देखो मेरे जीवन को वृत्ति बना दिया।

मृत्यु की मृत्यु

जब देवी मौन होने लगी तो ऋषि कहता है देवी मृत्यु भी है। अब ऋषि कहता है क्या मृत्यु है। तो देवी ने कहा प्रभु आगे अमृतम्। उन्होंने कहा कि जैसे राजा जनक की सभा में अर्द्धभाग ने याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से कहा था हे याज्ञवल्क्य मृत्यु की मृत्यु क्या है? याज्ञवल्क्य मुनि ने कहा था क्या मत कहो ऋषि कि मृत्यु की मृत्यु नहीं होती, अरे! मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है ब्रह्म को जानने वाली की मृत्यु नहीं हुआ करती। तो मेरे प्यारे! ऋषि इतना उद्गीत गा करके अपने

में मौन हो गया। उसने कहा धन्य है भगवन्! तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि अपने आसन पर विद्यमान थे और इतना उच्चारण करके, इतनी विवेचना देने के पश्चात् मेरे प्यारे! देखो ऋषि पत्नी मौन हो गई।

विचार आता रहता है बेटा! यही व्यक्तव्य जब महर्षि जमदग्नि आश्रम में ऋषि ने अपना मन्तव्य दिया तो ऋषि भी अपने में मौन हो गया। ऋषियों ने आपस में देखो उनका जो विचार विनिमय होता उसमें वह स्वयं संतुष्ट हो गये क्योंकि ऋषि तो अपने में संतुष्ट होते हैं। तो मेरे प्यारे! वह संतुष्ट हो गये सन्तुष्ट हो करके अपने को यह कहा प्रभु हमारा वरणीय हैं हम उसको अपना वरूण बना करके इस सागर से पार होने का प्रयास करें। यमदम ब्रह्मा हम यमराज को देखो यम को विजय करें। यम कहते हैं मृत्यु को, अन्धकार को। अन्धकार को न आने दे। यमराज अमब्रव्हे यमराज मानम् ब्रहे देखो उसको न आने दे। तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने तो इतना उद्गीत गा करके मौन हो गये। ऋषि देवी ने उनके चरणों की वन्दना की और ऋषि मुनियों ने भी पिप्पलाद मुनि महाराज के इन विचारों का मानो देखो अपने में संतुष्ट हो करके अपने-अपने आश्रम को चले गये।

विचार आता रहता है बेटा! आज मैं कोई व्याख्यता नहीं हूँ मैं तुम्हें परिचय देने के लिए चला आया हूँ और वह परिचय क्या है क्या **वेद के ऋषियों ने कहा कि मृत्यु का अभाव है संसार में। मृत्यु मानो देखो अज्ञान का नाम ऋषि ने कहा है और ज्ञान का नाम जीवन है। जितना ज्ञान हो जाता है उतना प्रकाश हो जाता और जितना प्रकाश हो गया उतना प्रभु के राष्ट्र में चले गये।** तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि पिप्पलाद ने कहा क्या मृत्यु का अभाव है मानो देखो मैं इसकी शेष चर्चाएँ कल प्रगट कर सकूँगा। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

दिनांक : 15 जुलाई, 1992

स्थान : मकनपुर, गाजियाबाद

।। ओ३म् ।।

ऋषियों के उद्‌गार

1. परमात्मा ने जब सृष्टि प्रारम्भ की तो आत्मा के अनुरोध से की।
2. परमात्मा के नियम के आधार पर यह संसार बनता है अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति होती है।
3. यह जो प्रकृति है इसमें स्वतः ही पूर्व की भाँति सब बीज रूप अँकुर में रहता है।
4. परमात्मा ने इतने बड़े ब्रह्माण्ड को इस प्रकृति से बनाया है।
5. यह विद्युत तो प्रारम्भ से है, यह तो तन्मात्राओं का रूप है।
6. यह मानव जाति सब युवा अवस्था में हुई।
7. हमारे अन्तःकरण में भी यज्ञशाला विराजमान हैं।
8. जो तुम यज्ञ करो उसमें संकल्प भी महान् ऊँचे होने चाहिए।
9. बिना विधान यज्ञ करने से यज्ञ न करने के बराबर हो जाता है।
10. मुनिवरो! जब विधान से ऋत्विज नहीं चुने जायेंगे, चाहे कैसा भी यज्ञ हो वह लाभदायक नहीं होगा।
11. वेद वाणी के उच्चारण से इस विशाल वायुमण्डल को शुद्ध किया जाये जिससे कि मानव के अन्तःकरण में शुद्ध भावनायें आयें।
12. वेद में कहा है कि मेरी विद्या पाने का सभी को अधिकार है परन्तु उसको ही अधिकार है जिसकी क्रिया भी उसके अनुकूल हो। जो उस पर न चलने वाला हो उसको मेरी वेद विद्या पाने का कोई अधिकार नहीं है।
13. जीवन की योजना को ऊँचा बनाओ।
14. देवता अच्छे संस्कार, अच्छी मान्यता और दैत्य काम, क्रोध, मद, लोभ आदि हैं।
15. मानव के लिए सत्य असत्य को जानना ही मानव का सबसे बड़ा धर्म है।
16. सत्य को विचारने के लिए मुनिवरो! अपने को विचारा जाता है कि मैं भी सत्य हूँ या नहीं?
17. जिस काल में धर्म की मर्यादा समाप्त हो जाती है, उसी काल का नाम कलयुग माना गया है।

।। ओ३म् ।।

श्रद्धा-सुमन

परमपिता परमात्मा कि सृष्टि में आवागमन का चक्र निरन्तर गतिशील रहता है उसी व्यवस्था के अन्तर्गत मानव अपने जीवन में आगे बढ़ते हुए अन्त में अपने स्थूल शरीर को त्यागकर पञ्च महाभूतों में विलय करते हुए आत्मा अपने कर्मों के अनुसार अपनी यात्रा में संलग्न हो जाती है। ऐसा ही श्री यतेन्द्र त्यागी जी की माता श्रीमती श्रीचन्द्रवती पत्नि स्व. श्री सूरज प्रकाश त्यागी दिनाँक 14 मार्च, 2015 को अपने नश्वर शरीर को त्यागकर अमरावती को गमन कर गई।

श्री त्यागी जी ग्राम चरथावल जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश के निवासी हैं जहाँ पर कि उनकी माता जी ने विषम परिस्थितियों में अपने पुत्रों को उत्तम शिक्षा कराते हुए वैदिक परम्परा से भी पूर्ण रूप से अपनी छत्रछाया में सम्पन्न किया। जिसके फलस्वरूप आज भी परिवार के सभी सदस्य उन्हीं आदर्शों पर चलते हुए अपने को अध्यात्म ज्ञान से निरन्तर सम्पन्न करने में प्रगतिशील रहते हैं।

अपनी पूज्य दादी जी की स्मृति में श्रद्धासुमन के रूप में श्री आलोक त्यागी व उनकी धर्मपत्नि श्रीमति ऋचा त्यागी ने जनकल्याण के लिए प्रकाशन के कार्य में 2100 रु. का सहयोग प्रदान किया है। जिसके लिये समिति हृदय से आभार प्रकट करती है और संतप्त परिवार के लिए परमपिता परमात्मा से वहन करने की शक्ति प्रदान करने के साथ-साथ उस पवित्र आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	50.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	50.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	50.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	50.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	50.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	30.00
10.	शंका-निवारण	30.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
13.	देवपूजा	20.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	110.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	110.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	100.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	25.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	25.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	30.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	25.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पंच-महायज्ञ	30.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	30.00
29.	याग-मन्जूषा	25.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	25.00
32.	याग और तपस्या	45.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	25.00
35.	याग-चयन	25.00
36.	दिव्य-रामकथा	110.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	25.00
38.	दिव्य-ज्ञान	35.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	80.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	25.00
41.	आत्म-उत्थान	30.00
42.	तप का महत्व	30.00
43.	अध्यात्मवाद	25.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	35.00
45.	वैदिक-प्रभा	30.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	35.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	30.00
50.	आत्मा का भोजन	35.00
51.	साधना	30.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 6)	60.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
56.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 7)	60.00
57.	माता मदालसा	40.00
58.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 8)	60.00
59.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 9)	65.00
60.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 10)	70.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 11)	80.00
63.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 12)	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएं	50.00
65.	प्रभु दर्शन	50.00
66.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 13)	80.00
67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम्, कर्म भूमि लाक्षागृह	10.00

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	200 रुपये
डॉ. ओ.पी. आर्य, आगरा, उत्तर प्रदेश	125 रुपये
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्णा नगर, दिल्ली	100 रुपये
श्रीमती वीना त्यागी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश	100 रुपये
मास्टर कवन्धि, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	101 रुपये

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गंगा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 800 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 100 रु. है जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी एक पते पर भी डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं—

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मंत्री
   ए-59, पंचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

महर्षि भारद्वाज ने कहा कि प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ कि मानव के द्वारा ऐसा कौन-सा संकल्प है, ऐसी कौन-सी प्रतिभा है जिससे आवागमन के सँस्कार हमारे अन्तःकरण में प्रविष्ट न हों। उस समय महर्षि पिप्पलाद जी ने कहा कि भाई इस पर विचार-विनिमय करेंगे। दोनों ऋषियों का विचार-विनिमय होने लगा। उन्होंने कहा कि यदि ऐसा कोई कार्य हो तो वह जो आन्तरिक भावनाएँ हैं उन आन्तरिक भावनाओं को इतना उज्ज्वल बनाया जाए, इतना पवित्र बनाया जाए कि जिससे यह सँस्कार का जो नाना प्रकार का द्वेषवाद है, नाना प्रकार का जो रूढ़िवाद है मस्तिष्कों में उसका सँस्कार उत्पन्न न हो। हमें वह स्वप्नवत को भी प्राप्त नहीं होना चाहिए। महर्षि भारद्वाज बोले कि हे भगवन् जब हम संसार में रमण करते हैं, नाना प्रकार की औषधियों का पान करते हैं। हमारा प्राण इस वायुमंडल में भ्रमण करता है, प्रकृति की गर्भ में हम आए हैं, माता अहिल्या की गोद में हम आए हैं, तो नाना प्रकार के सँस्कारों का जन्म होना स्वाभाविक हो जाता है। उन्होंने कहा प्रभु! सँस्कारों का जन्म उस काल में होता है। जबकि मानव उन विचारों पर जो इष्ट विचार हैं उनपर टिप्पणी करना प्रारम्भ कर देता है। टिप्पणी के साथ-साथ उसमें घृणा होती है। और घृणा के साथ में ही अभिमान होता है और अभिमान के साथ में अपनी करुणा नहीं होती है तो उस मानव के द्वारा उसके सँस्कार जन्म ले लेते हैं। वह आवागमन का मूल कारण बनता चला जाता है। उसी में मानव की पुनरावृत्ति होती रहती है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 43 : अंक : 513
जून 2015

मूल्य :
दस रुपये

प्रकाशक, मुद्रक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश (प्रकाशन मंत्री वै.अ.स.) द्वारा वैदिक अनुसंधान समिति पञ्जी०
के लिए नवप्रभात प्रिटिंग प्रैस, दिल्ली से छपवाकर सी-38,
शिवालिक मालवीय नगर, नई दिल्ली-17 से प्रकाशित।
(अवै०) सम्पादक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश, दूरभाष : 41030481

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2015-17
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2015-2017
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-06-2015
Published on 5th day of the same month

POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-06-2015
Published on 5th day of the same month